International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.in
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 72-73

अज्ञेय की कहानियां और गहरी मानवीय पीड़ा

डॉ0 हरीश कुमार सोनी

चंद्रशेखर आजाद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीहोर, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

मानवीयता मानव का अलंकार और जीवन का अभिन्नतम् अंग है। यदि मानव ढांचा है तो मानवीयता प्राण है। यदि मानव सीप है तो मानवीयता उस सीप का मोती है। मानव हृदय में मानवीयता सहज ही समाहित रहती है। मानवीय पीड़ा ही सच्चे अर्थो में मानव की पवित्र आत्मा है। जिस मनुष्य में मानवीयता न हो, मानवीय पीड़ा न हो, संवेदना न हो, प्रेम न हो, त्याग न हो, समर्पण न हो वह घोर तमस का शिकार है, बीमार है और जड़ हीन वृक्ष के सदृश है। वह कागज़ का फूल मात्र है – न सौन्दर्य न महक।

अज्ञेय की कहानियों में मानवीय पीड़ा सहज ही दिखाई दे जाती है। वे पग पग पर मानव हृदय की पीड़ा को उजागर करने में सफल हुए हैं। अज्ञेय की कहानी 'रोज़' में गहरी मानवीय पीड़ा हिलोर लेती दिखाई देती है। कहानी के पात्रों की अपनी अपनी पीड़ा और मौन घुटन है। कहानी की केन्द्रीय पात्र 'मालती' का बेटा 'टिटी' पलंग से गिरा तो अगंतुक मानवीयता के उज्जवल पक्ष के वशीभूत हो बोला 'चोट लग गई होगी बैचारे को।' 'मालती' का जीवन आगंतुक के साथ पाठकों को भी द्रवीभूत करता है। आगंतुक के मुख से निःसृत शब्द वास्तव में 'मौन आह' के करूण कृंदन है। ''मुझे ऐसा जान पड़ा मानो किसी जीवित प्राणी के गले में मृत जन्तु का तौक डाल दिया गया है, वह उसे उतार कर फेंकना चाहे, पर फेंक न पाये.....''[1] आगंतुक ने 'मालती' की मुख मुद्रा को 'मुरझाई हुई मुख मुद्रा' कहा है। 'हीलीबोन की बत्तखें' कहानी में भी गहरी मानवीय पीड़ा झलकती है। कहानी में लोमड़ी का पारिवारिक घरेलू दृश्य पाषाण हृदय को भी क्षत–विक्षत कर देता है। कहानी का सारा दृश्य जब आंखों के सामने तैरता है तब आंखे नम हुए बिना नहीं रह सकती है। प्राणहीन नर लोमड़ के शव के पास सहमी सी, दुःखी सी लोमड़ी और उसके छोटे–छोटे बच्चे खड़े हैं जो लोमड़ी के पैरों के पास कुनमुना रहे हैं। वे थनों को नहीं ढूंढ रहे हैं, उन्हें पेट की नहीं वरन् हृदय की भूंख है जो अपने पिता के लिये है। यह पितृ–प्रेम उन्हें व्याकुल कर रहा है जो आज के बाद मिलने वाला नहीं हैं। यह घरेलू दृश्य देख कहानी की पात्र 'हीली' अत्यंत दुःखी है, इसी दुःख ने 'हीली' में क्रोध उत्पन्न किया और इसी के तहत् 'हीली' ने केप्टन दयाल से कहा 'दूर हटो हत्यारे।' इन शब्दों से 'हीली' की मानवीय पीड़ा का सहज ही दर्शन होता है। 'विपथगा' कहानी में भी मानवीता का दृश्य साकार हो उठा है। अज्ञेय ने कहानी में मनुष्य की पीड़ा को ऐसे उद्घाटित किया है कि यह पीड़ा पाठक को स्वयं की सी लगती है। ''दीप बुझता है और धुंआ उठता है। किन्तु जब हमारे विस्तृत देश के भूंखे, पीड़ित, अनाश्रित कृषक–कुटुम्ब सड़कों पर भटक–भटककर हेमावृत्त धरती पर बैठकर अपने भाग्य को कौसने लगते हैं, जब उनके हृदय में सुरक्षित आशा की अन्तिम दीप्ति बुझ जाती है, तब एक आह तक नहीं उठती।''[2] प्रसाद जी ने भी विह्ल हृदय को दिखाकर कहा है कि 'इस करूण कलित हृदय में विकल रागिनी बजती।' पशु–पक्षी के संदर्भ में भी हृदय करूणित हो जाता है। जब बहेलिया क्रोंच पक्षी के जोड़े में से एक को मार डालता है तब शोक विह्ल क्रोंची की कातर वाणी सुनकर ही वाल्मीकि 'मा निषाद प्रतिष्ठाम्' कह उठते है। मनुष्य की दीन–हीन दशा और पीड़ा देखकर तुलसीदास जी भी द्रवीभूत हो जाते हैं। ''यही करूणा तुलसी के काव्य का भी आधार है। जिसमें मनुष्य की दीन–हीन दशा, सामाजिक विसंगतियां, साम्राज्यवाद तथा पूंजीवाद पर प्रहार है।''[3]

अज्ञेय ने सामाजिक विसंगतियों की कहानियों में मानवीय पीड़ा को शब्दबद्ध किया है। 'जिजीविषा' कहानी की पात्र 'बातरा' आज के समय की दलित और पीड़ित नारी की करूण गाथा की जीवंत प्रतिमूर्ति है। आज भी कहीं कहीं पर या यूं कहें कि अत्यंत निर्धन क्षेत्रों में ऐसी स्थिति यदा कदा देखी जा सकती है। ''बातरा अपनी घुटनों तक ऊंची, कमर के पास फटी हुई और छाती के सिर्फ बांये भाग को मुश्किल से ढांपने में समर्थ मैली धोती का छोर पकड़कर उसे बदन से सटाती हुई चल रही थी।''4 यहां मानवीय पीड़ा का घना रूप दिखाई देता है। उसके पैरों में फटी हुई बिवाईयां उसकी पीड़ा को चीख चीख कर बयां कर रही है। बतरा को जब पुलिस ने हथकड़ी लगाई तब उसका बच्चा भी इस दुर्दांत स्थिति को भोगकर हमेशा के लिये चुप हो गया। 'बच्चे की गर्दन एक ओर लटक रही थी और मुंह से राल मिला खून बह रहा था।' ये दृश्य तो मानवीय पीड़ा को भी पीड़ा पहुंचाता है। ऐसी पीड़ा 'पहाड़ी जीवन' कहानी में भी उत्कृष्ट रूप में पग पग दिखाई देती है। कहानी का पात्र 'गिरीश' उस स्त्री की पीड़ा से दुःखित है जिसने विवशता के कारण खुद को सौदेबाजी के दल दल में धकेल दिया है। गिरीश ने उस स्त्री से कहा कि 'मैंने तुम्हारी सारी बात सुन ली है, मैं उससे दुःखित हूं और उस काम से मुझे घृणा है।' मैं तुम्हें इस नरक के चक्रव्यूह से बाहर निकालना चाहता हूं। ये शब्द गिरीश के करूणित हृदय के एहसास हैं। गिरीश की भांति 'बिशनसिंह' भी संवेदना से सराबोर पात्र है जो 'रमंते तत्र देवता' कहानी का केंद्रीय पात्र है। यह पात्र संवेदना और करूणा के वशीभूत हो दंगे में फंसी स्त्री को बचाता है और गुरूद्वारे में अपनी बहिन के पास छोड़ देता है। 'क्या बात है सरदार जी ! खैर तो है ?' के जवाब में वे करूण स्वर में बोले– ''सब खैर ही खैर है इस अभागे मुल्क में, भाई साहब और क्या कहूं ! मैं तो कहता हूं, दंगा और खून खराबा न हो तो कैसे न हो जबकि हम रोज नई जगह उसकी जड़ें रोप आते हैं फिर उन्हें सींचते हैं.....।''[5] बिशनसिंह सहज शब्दों में अपनी पीड़ा और संवेदना को उजागर कर देते हैं। अज्ञेय ने अपनी कहानी 'लेटर बाक्स' में तो मानवीय पीड़ा को चरम पर पहुंचा दिया है। पग पग पर लोमहर्षक और हृदय विदारक दृश्य अपना असर दिखाते नजर आते हैं। कहानी के पात्र 'रोशन' की स्थिति अत्यंत दयनीय है। पांच वर्ष का 'रोशन' गोरा रंग, फटी कमीज, आधा नंगा, चोटों के निशान, बाल रूखे और आंखों में अनंत गहराई है। दुश्मनों ने उसकी टोली पर हमला बोल दिया, पिता जी बिछड़ गये और टोली के कई लोग मारे गए। मॉ के मुंह पर उल्टी कुल्हाड़ी से इतने वार किये कि मॉ का जबड़ा लहू–लुहान हो गया और रोशन ने अपना मुंह फेर लिया। यहां मानवता भी शर्मसार हो गई।

अज्ञेय जी ने सैनिक–जीवन को तो साक्षात् दृश्यात्मक बना दिया है

या यूं कहें कि सैनिक जीवन की सारी परतें खंगाल दी है। सैनिक जीवन में अनेक पीड़ाएं होती है जो उसे झेलना पड़ती है। 'हारिति' कहानी की पात्र 'हारिति' अपना कर्त्तव्य निर्वहन कर अधिकारी द्वारा दिया गया पत्र गंतव्य तक पहुंचाती है और जब उसे पता चलता है कि यह सरकारी मोहर वाला पत्र मात्र 'प्रेम–पत्र' है तब वह दुःखित हो स्वयं को कोसती नजर आती है। उसकी पीड़ा उसके चेहरे के भावों से सहज उजागर होती है। उसके सामने सारे दृश्य परत–दर–परत तैरने लगते हैं। उसने अपने अनन्य प्रेमी 'क्वानयिन' की बलि दे दी और साथ ही उन्य लोग भी मारे गये। 'हारिति' घोड़े के संदर्भ में भी अपनी पीड़ा व्यक्त करती है। अज्ञेय समाज में पसरी घृणित मानसिकता को बड़े पारखी ढंग से उजागर करते हैं। 'बदला' कहानी का पात्र मानवता के उज्जवल पक्ष के कारण ही अपना सर्वस्व लुटाकर भी लोगों की मदद करने के लिये संकल्पित है। मानवीय पीड़ा के कारण ही सरदार जी हिन्दू महाशय के उकसाने पर कटु शब्दों में प्रत्युत्तर देते हैं। ''बहू बेटियां सब की होती है, बाबू साहब।'' ''बाबू साहब औरत की बेइज्जती सबके लिए शर्म की बात है।''[6] सरदार जी के ये शब्द मानवीयता से सराबोर है। मानवीय पीड़ा सरदार जी को उत्कृष्टता के सोपान पर आसीन करती है। 'वे दूसरे' कहानी एक सर्वश्रेष्ठ और पात्रों की पीड़ा को उजागर करने वाली सशक्त कहानी है। पात्रों में प्रेम और विवाह की उधेड़बुन का उचित चित्रण है। काम तृप्ती मनुष्य की प्राकृतिक और जैविक लालसा होती है। यह लालसा जब शारीरिक के साथ आत्मिक हो तभी सार्थकता ग्रहण करती है। कहानी के पात्र 'हेमंत' और 'सुधा' का सम्बंध आत्मिक कभी न हो सका। उनका रिश्ता पूर्ण कभी न हो सका और होता भी कैसे ? क्योंकि दोनों किसी दूसरे से जुड़े थे। जब आत्मा और शरीर साथ न हो तो प्रेम का बंधन कमजोर और ढीला ही होता है। वे अलग हो गये लेकिन ग्लानि का भाव दोनों में था। 'हेमंत' कष्टाभाव से स्वयं से ईर्ष्या करता है और कहता है ''सुधा, मैं कह नहीं सकता कि मेरे मन में कितनी ग्लानि है और मैं जानता हूं कि वह वर्षों तक मुझे खाती रहेगी––––– मुझे लगता है कि अनुताप का यह बोझ मैं सारा जीवन ढोता रहूंगा।''[7] ऐसी ही मानवीय पीड़ा अज्ञेय की 'हजामत का साबुन' कहानी में भी साकार होती दिखती है। जब लालाजी नौकर 'हीरू' को पीटते हैं तब आगंतुक व्यथित हो जाता है। इस दृश्य से पाठक ह्रदय भी द्रवित होता है। लाला के मोटे थुलथुल हाथ का थप्पड़ नौकर 'हीरू' के गाल पर तपाक से पड़ा, एक ही जोर के झटके में 'हीरू' चकरघन्नी हो गया। मानवीयता के सकारात्मक प्रभाव के कारण आगंतुक ने तीखी प्रतिक्रिया दी ''ओ लाले के बच्चे, क्यों पीटता है ?''[8]

यहि संवेदना है, यही मानवीय व्यवहार है, यही प्रतिक्रिया है और यही कर्त्तव्य है कि 'हीरू' की पीड़ा देख आगंतुक पीड़ित हो जाता है और अपनी भावना प्रकट करता है।

निष्कर्ष

अज्ञेय ने अपनी कहानियों में मानवीय पीड़ा को सार्थकता दी है। कहानियों के केन्द्र में दुःख, दर्द, पीड़ा और मानवीय पक्ष को उजागर किया है। पाठक द्रवीभूत न हो ऐसा असम्भव ही प्रतीत होता है। सारे के सारे पात्र समाज से ही उठाये गये हैं और अपने से लगते हैं। पात्रों की पीड़ा में पाठक सहज ही शामिल हो जाते हैं। यह पीड़ा मात्र पात्रों की नहीं वरन् सारे समाज के हर व्यक्ति की पीड़ा है। अज्ञेय की समस्त कहानियां समाज पर अपना असर दिखाती है और समाज का सच्चा लेखा जोखा है।

संदर्भ ग्रंथ

1. अज्ञेय की सम्पूर्ण कहानियां : रोज़ : पृष्ठ 208
2. अज्ञेय की सम्पूर्ण कहानियां : विपथगा़ : पृष्ठ 92
3. अन्तिम दशक की हिन्दी कहानियां : संवेदना और शिल्प : डॉ नीरज शर्मा : पृष्ठ 28
4. अज्ञेय की सम्पूर्ण कहानियां : जिजीविषा़ : पृष्ठ 431
5. अज्ञेय की सम्पूर्ण कहानियां : रमंते तत्र देवता़ : पृष्ठ 495
6. अज्ञेय की सम्पूर्ण कहानियां : बदला़ : पृष्ठ 532
7 .अज्ञेय की सम्पूर्ण कहानियां : वे दूसरे़ : पृष्ठ 514
8. अज्ञेय की सम्पूर्ण कहानियां : हजामत का साबुऩ : पृष्ठ 580